Introduction

प्राक्कथन

बचपन से ही मुझे अच्छा साहित्य पढ़ने का शौक रहा है। जब मैं कॉलेज में आई तो मुझे और भी अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ने का मौका मिला। एक दिन मैं पुस्तकालय में कोई पुस्तक देख रही थी कि अचानक मेरी नजर शिवानी द्वारा लिखित उपन्यास 'कृष्णकली' पर पड़ी और उत्सुकतावश मैंने उसे खोलकर पढ़ना शुरू किया। वह मुझे इतना अच्छा लगा की फिर तो उस पुस्तकालय में शिवानी जी के जितने भी उपन्यास थे सभी पढ़ डाले। इन रचनाओं को पढ़ने के बाद मैं शिवानी जी की और कृतियाँ पढ़ने को लालायित हो उठी। जहाँ भी जाती शिवानी जी की रचनाएँ ही तलाशती और मिलने पर एकान्त में बैठकर कथानक के साथ बह जाती। विभिन्न हिन्दी लेखक-लेखिकाओं को पढ़ने के बाद भी मैं शिवानी के उपन्यासों से उत्पन्न तृष्णा का शमन न कर सकी तथा अपनो आपको शिवानी जी के उपन्यासों के करीब रखने के प्रयास दिन-ब-दिन तीव्र होते गये।

इस तरह जब मुझे पीएच.डी करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो मैंने शिवानी को विषय बनाया। श्रद्धेय गुरूवर डॉ. ओ. पी. यादव से प्रथम परिचय के दौरान मैंने अपनी रूचि व्यक्त की और उन्होंने मेरी रूचि की कद्र करते हुए मुझे जो शोध विषय सुझाया, वह है 'शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण'। इसी विषय पर मैं अपना शोध कार्य प्रस्तुत कर रही हूँ। सम्पूर्ण प्रबन्ध छः अध्यायों में विभक्त है। शिवाजी के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण' विषयक यह शोध प्रबन्ध डॉ. ओ. पी यादव के निर्देशन में लिखा गया है। उन्होंने अपने अतिव्स्त समय में से मुझे इस कार्य हेतु समय देकर कृपा की है। उनका स्नेह भाव मेरे प्रति सदा बना रहा है। इस हेतु मैं उनकी ऋणी रहुँगी। उनके सतत निर्देशन, कृपा, स्नेह व प्रेरणा से ही यह शोध कार्य पूरा हर पाई हूँ।

डॉ. प्रेमलता बाफना के प्रोत्साहन व सहायता से मुझे प्रस्तुत कार्य में निरन्तर सम्बल मिलता रहा है , मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हुँ। मेरे पति श्री. एस. आर शर्मा के निरन्तर सहयोग व प्रेरणा के बिना यह शोध कार्य असम्भव था, अतः उनका स्मरण मैं आवश्यक समझती हूँ। मेरे पति द्वारा मेरी शोध कार्य की रूचि को दी गई सर्वोच्च प्राथमिकता हुेत कोटिशः धन्यवाद एवं शोध कार्य के दौरान 'अस्तित्व' के अस्तित्व का अहसास तथा अस्तित्व के आगमन से मिली नित नई स्फूर्ति के लिए ईश्वर को शत्-शत् प्रणाम।

जिन लेखकों, विद्वानों की रचनाओं, ग्रन्थों व पुस्तकों से सहायता ली है तथा जो परोक्ष-अपरोक्ष रूप से इस कार्य में सहायक हुए हैं, का भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

मेरी दोनों बहनों शैलजा एवं दीपा जिन्होंने मुझे मेरी पढ़ाई के दौरान कभी कोई परेशानी नहीं आने दी आभार प्रकट करती हूँ और अन्त में यह सम्पूर्ण शोध कार्य स्व. पिता श्री दीनदयाल शर्मा को सर्म्पित करती हूँ जिनके आशीर्वाद से यह शोध कार्य पूर्ण हो सका।

– मीनू शर्मा